वृत्तपत्राचे नांव :- हमारा महानगर
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- मुंबई
वृत्तपत्र पान नं.:- 6
दिनांक :- 16-10-2007
कटिंग नंबर: .....

सारे धर्मों को मूल वेद

भारत तो हमेशा से ही प्रति भारत है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र में उसकी प्रतिभा जागती है। इसीलिए भारत भूमि को वेदभूमि-देवभूमि कहते हैं। भारत की दिनचर्या का अभिन्न अंग उसकी वैदिक धर्मचर्या है। भारतीय अपना प्रत्येक कार्य अपने वैदिक धर्म के अनुसार करते हैं। भारतीय सर्वत्र मौजूद उस दैवीय सत्ता को जानते हैं, मानते है जिससे सारी सृष्टि संचालित हो रही है। इसीलिए किसी भी क्षेत्र के कार्य को करने के लिए प्रकृति के नियमों का अनुपालन करते रहते है। भारतीय अपनी परंपरा से ही इन नियमों का पालन इसीलिए करते आ रहे है, क्योंकि उनको यह बात अच्छी तरह से ज्ञात है कि इनका उल्लंघन किसी भी कार्य को सुचारू नहीं चलने देता। हम देख रहे है कि दुनिया में जहां कहीं भी गड़बड़ी है, वहां प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन हो रहा है। प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन इसलिए होता है, क्योंकि उनका अनुसरण करने की विद्या नहीं जानते, नहीं मानते लोग। प्राकृतिक नियमों की अनुकंपा, दैवीय अनुकंपा इसीलिए बनी रहती है कि हम उनको बनाए रखने के लिए

महर्षि महेश योगी

वेद विज्ञान को जानते हैं। सर्वज्ञ और सर्वसमर्थ बनाने वाली यह वेद विद्या भारत के गांव-गांव में परंपरा से चली आ रही है। भारतीय अपने वैदिक धर्म का पालन परंपरा से करते आ रहे है। इसीलिए अपने यहां कहा गया है कि सारे धर्मों का मूल वेद ही है। सारी सृष्टि का संचालक वेद है, ऋग्वेद है। अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद इसका विस्तार है। सारे वेदांग इसी का विस्तार है। ये सब आत्मचेतना को जागृत करने के लिए ही हैं। इसलिए भारत के, जो वेद-वेदांग, वेदांत, कर्म, धर्म के जो सिद्धांत हैं, वे हरेक की आत्मचेतना में जागृत होने चाहिए। आत्मचेतना की जागृति आवश्यक है। वेद आत्मा का ही एक रूप है। स्वर व्यंजित हुआ, शब्द बना, वाक्य बना, पदार्थ बना और पूरा भौतिक जगत बन गया। इसीलिए कहते है कि सारी विश्व चेतना, सारा विश्व वेद का ही पसारा है। इसलिए प्रत्येक क्षेत्र में वेद का ज्ञान होना चाहिए। आज धर्म, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, राजनीति, प्रशासन, सुरक्षा व्यवसाय की जितनी भी संस्थाएं हैं, सब गलत सिद्धांतों पर चल रही हैं। अगर मूल में वेद नहीं होगा, तो सफलता कैसे मिलेगी। सभी संस्थाओं के मूल में वेद होना ही चाहिए। आज आधुनिक विज्ञान की शोध में भारत के वेद विज्ञान को सिद्ध कर रही हैं, ज्ञान का बीज तो आज भी हमारे ही पास है, क्योंकि अपनी भारतीय वेद-विद्या सनातन है।